
बृहद आर्थिक रूपरेखा विवरण
मध्यावधि राजकोषीय नीति विवरण
राजकोषीय नीति कार्य योजना विवरण
राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन अधिनियम की धारा 7 के अंतर्गत
वित्त मंत्री का वक्तव्य

Macro-Economic Framework Statement
Medium Term Fiscal Policy Statement
Fiscal Policy Strategy Statement
Finance Minister's Statement under Section 7 of the FRBM Act

वृहत आर्थिक रूपरेखा विवरण

अर्थव्यवस्था का सिंहावलोकन

सतत, उच्च और व्यापक आधार युक्त वृद्धि आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन के लिए अनिवार्य है और ऐसी वृद्धि के लिए जो आवश्यक है वह है अर्थव्यवस्था में निवेश में बढ़ोतरी। हाल के वर्षों में वृद्धि और निवेश दोनों मोर्चों पर सकारात्मक घटनाक्रम के कुछ उत्साहवर्धक संकेत हैं। हाल ही में पिछले कुछ समय का रिकार्ड वृद्धि में आई संभावित तेजी और निवेश में बढ़ोतरी की ओर इंगित करता है। पिछले दो वर्षों में प्रत्येक में 20 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी के बाद चालू वर्ष के पहले दस महीनों में अमरीकी डालर के रूप में पण्य निर्यात वृद्धि (25.6 प्रतिशत), विनिर्माण क्षेत्रक में बहाल हुई तीव्रता और बढ़ी हुई निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता के चलते निर्यातों की मात्रा में निरन्तर वृद्धि को प्रतिबिम्बित करता है। निर्यातों में संतुलित वृद्धि और पण्य निर्यातों में और भी तीव्रतर वृद्धि के बावजूद, चालू खाता शेष पिछले लगातार तीन वर्षों में अधिशेष में रहने के बाद चालू वर्ष की पहली छमाही (अप्रैल-सितम्बर 2004-05) में घाटे में बदल गया।

2. 2004-05 की पहली छमाही में मुद्रास्फीति में अचानक तेजी आई जो मुख्य रूप से वैश्विक पेट्रोलियम मूल्यों और वस्तुओं के मूल्यों में तीव्र वृद्धि से उत्पन्न हुई थी। वर्षा की कमी और विदेशी मुद्रा भंडारों की अनुवृद्धि से मौद्रिक प्रलंबन भी मुद्रा स्फीति प्रत्याशाओं की संभावित वृद्धि का कारण बने हों। वर्ष 2004-05 में, 3 अप्रैल, 2004 को 4.5 प्रतिशत की बिन्दु-दर-बिन्दु वार्षिक मुद्रास्फीति दर से शुरुआत के बाद, 28 अगस्त, 2004 को 8.7 प्रतिशत की मुद्रास्फीति का अत्यधिक उच्च स्तर देखने में आया जो पिछले चार वर्षों में अधिकतम था। तथापि भारतीय रिजर्व बैंक और सरकार द्वारा किए गए त्वरित मौद्रिक और राजकोषीय उपायों के साथ-साथ वैश्विक पेट्रोलियम मूल्यों में आई थोड़ा कमी के परिणामस्वरूप मुद्रास्फीति में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई और यह एक वर्ष पूर्व 6.1 प्रतिशत की तुलना में 5 फरवरी, 2005 को 5 प्रतिशत पर थी।

3. कुल खाद्यान्न उत्पादन के द्वितीय अग्रिम अनुमान के अनुसार खाद्यान्न पैदावार में पिछले वर्ष 212 मिलियन टन से गिरकर 2004-05 में 206.4 मिलियन टन तक आने की आशा है जिसमें मोटे अनाजों और दालों की पैदावार में कमी आई है। चावल और गेहूं की पैदावार वास्तव में पिछले वर्ष की अपेक्षा अधिक होने का अनुमान है। औद्योगिक उत्पादन सूचकांक के अनुसार, औद्योगिक क्षेत्रक में 2004-05 के पहले तीन महीनों में 8.4 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज हुई, जो 1995-96 के बाद सर्वोच्च वृद्धि है।

4. स्थूल मुद्रा (एम₃) वर्ष के आरंभ में इसके स्टॉक के सापेक्ष पिछले संपूर्ण वर्ष में 16.6 प्रतिशत की उच्च वृद्धि और पिछले वर्ष की इसी अवधि में 12.1 प्रतिशत की तुलना में, चालू वर्ष में 21 जनवरी, 2005 तक 9.5 प्रतिशत बढ़ी (रूपान्तरण को घटाकर)। इक्विटी बाजार, जिसमें 2003-04 में अत्यधिक तेजी आई थी, जनवरी, 2005 में उत्साहवर्धक बना रहा। शीर्ष 50 स्टॉकों (निफ्टी) ने 2003 में 72 प्रतिशत के प्रतिलाभ के बाद 2004 में 11 प्रतिशत का प्रतिलाभ अर्जित किया। लघुतर स्टॉकों के दूसरे दर्जे (निफ्टी जूनियर) ने 2003 में 141 प्रतिशत के प्रतिलाभ के बाद 2004 में 31 प्रतिशत का प्रतिफल अर्जित किया।

सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि

5. वर्ष 2004-05 में भारतीय अर्थव्यवस्था का कार्य-निष्पादन अभी तक वर्ष के आरंभ में निर्मित संभावनाओं से बेहतर रहा है। कृषि और संबद्ध क्षेत्रक में पुनः तेजी से उत्साहित और उद्योग व सेवाओं में उच्चतर निष्पादन की मजबूती की मदद से अर्थव्यवस्था में 2003-04 में 8.5 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज हुई थी, जो 1975-76 और 1988-89 के अतिरिक्त, सर्वोच्च वृद्धि दर थी। सामान्यतया, मन्द वृद्धि के बाद

सुदृढ़ वृद्धि और सुदृढ़ वृद्धि के बाद मन्द वृद्धि की आशा की जाती है। 2003-04 में उच्च वृद्धि के बाद, 2004-05 के लिए आरंभिक वृद्धि अनुमान 6.2 प्रतिशत से 7.4 प्रतिशत के दायरे में आंके गए थे। इन साधारण प्रत्याशाओं में और कमी करके लगभग 6.1 प्रतिशत किया गया जब वर्षा में, जून, 2004 में सामान्य रहने के बाद, जुलाई के निर्णायक बुआई के महीने में, कमी आ गई और दक्षिण-पश्चिम मानसून 13 प्रतिशत रहा। सौम्य विश्व मुद्रास्फीति वातावरण, विशेषतया पेट्रोलियम, कोयला और इस्पात में बिगड़ती हालत ने अभिवृद्धि और मुद्रास्फीति के बारे में और आशंका का मार्ग प्रशस्त किया है। इस स्थिति में, 7 फरवरी, 2005 को केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) द्वारा जारी अग्रिम अनुमान के अनुसार 2004-05 में अर्थव्यवस्था में 6.9 प्रतिशत की अभिवृद्धि संभावित है।

6. स.घ.उ. में पिछले वर्ष की तदनुरूपी अवधि में 5.3 प्रतिशत और 8.6 प्रतिशत की तुलना में चालू वर्ष में की पहली तिमाही में 7.4 प्रतिशत और दूसरी तिमाही में 6.6 प्रतिशत अभिवृद्धि हुई है। दूसरी तिमाही में अभिवृद्धि में मंदी कृषि और संबद्ध क्षेत्र में 0.8 प्रतिशत की नकारात्मक अभिवृद्धि, और पहली तिमाही में सेवा क्षेत्र में 9.5 प्रतिशत की तुलना में 8.2 प्रतिशत की न्यूनतर अभिवृद्धि के कारण हुई है। उद्योग में अभिवृद्धि पहली तिमाही में 6.9 प्रतिशत से बढ़कर दूसरी तिमाही में 8.1 प्रतिशत हो गई। उद्योग के अंतर्गत विनिर्माण में अभिवृद्धि पहली तिमाही में 8.0 प्रतिशत से त्वरित होकर दूसरी तिमाही में 9.3 प्रतिशत हो गई जो 1997-98 से किसी तिमाही में सर्वोच्च थी, जब सी.एस.ओ. ने तिमाही अनुमानों का समेकन शुरू किया था। दूसरी तिमाही में न्यूनतर अभिवृद्धि के बावजूद चालू वर्ष के पूर्वार्ध में समग्र अभिवृद्धि पिछले वर्ष की इसी अवधि में प्राप्त 6.9 प्रतिशत अभिवृद्धि की तुलना में मामूली रूप से अधिक होकर 7.0 प्रतिशत है।

वैदेशिक क्षेत्र

7. विदेशी मुद्रा प्रारक्षित भंडारों में वृद्धि की प्रवृत्ति जारी रही तथा ऐसे भंडार (स्वर्ण, एसडीआर व आईएमएफ में प्रारक्षित भंडार की स्थिति सहित) 4 फरवरी, 2005 को 128.91 बिलियन अमरीकी डालर के अनुमानित स्तर पर पहुंच गए। उच्च मूल्यों के कारण केवल पेट्रोलियम, तेल और स्नेहक (पीओएल) आयात बिल में ही नहीं वरन् सर्साफा-भिन्न, पीओएल-भिन्न आयात में भी भारी पण्य व्यापार घाटा हुआ था जिसने चालू वर्ष के प्रथम दस महीनों में अमरीकी डालर मूल्यों में निर्यात की अभिवृद्धि को पराभूत कर दिया। विनिर्माण क्षेत्र में अगुवाई के साथ वस्तु वार निर्यात अभिवृद्धि निरंतर व्यापक-आधारित बनी रही। पीओएल-भिन्न, सर्साफा-भिन्न पण्य आयात में अनुमानित सुदृढ़ अभिवृद्धि वास्तविक अर्थों में मामूली सुदृढ़ रूप और अधिक आयात उदारीकरण सहित उत्प्लावक घरेलू मांग से संचालित थी।

8. पूंजी खाता अधिशेष भी अप्रैल-सितंबर, 2003 की तुलना में अप्रैल-सितंबर, 2004 में लगभग 1.5 बिलियन अमरीकी डालर कम थे। वाणिज्यिक उधारों के संतुलित अंतर्वाहों सहित उत्प्लावक विदेशी निवेश अंतर्वाहों ने पूंजी खाते को बनाए रखा। भुगतान संतुलन अधिशेष 2004-05 के पूर्वार्ध में लगभग 7 बिलियन अमरीकी डालर थे जो अप्रैल-सितंबर, 2003 से मोटे तौर पर आधे थे।

मुद्रा, बैंकिंग और पूंजी बाजार

9. वर्ष के शुरू में इसके भंडार की तुलना में प्रारक्षित मुद्रा में अभिवृद्धि 2002-03 के दौरान 9.2 प्रतिशत से बढ़कर 2003-04 के दौरान 18.3 प्रतिशत ऊंचाई तक और चालू वर्ष में 28 जनवरी, 2005 तक गिरकर 6.4 प्रतिशत हो गई। फिर भी, नकदी प्रबंधन प्रमुख चिंता बनी रही। यह पिछले वर्ष में तीव्र वृद्धि के पश्चात् नकदीकरण समंजन सुविधा (एलएएफ) के अंतर्गत बकाया प्रतिवर्ति रिपो, सरकारी अधिशेष बकाया और पिछले वर्ष से बैंकों के अतिरिक्त प्रारक्षित भंडार के रूप में 81,000 करोड़ रुपए से अधिक का नकदीकरण प्रलंबन था।

10. चालू वर्ष में मुद्रा आपूर्ति की न्यूनतर अभिवृद्धि के बावजूद अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा अंतरण को घटाकर, सकल बैंक उधार 21 जनवरी, 2005 तक पिछले वर्ष की तदनुरूपी अवधि में 9.3 प्रतिशत की तुलना में बढ़कर 19.9 प्रतिशत हो गए। यह अभिवृद्धि खाद्य और खाद्य-भिन्न

दोनों, विशेषकर खाद्य भिन्न के मामले में अधिक देखी गई थी। खाद्य उधार 21 जनवरी, 2005 को पिछले वर्ष 25.9 प्रतिशत की गिरावट की तुलना में चालू वर्ष में 15.2 प्रतिशत बढ़े हैं जबकि खाद्य-भिन्न उधार पिछले वर्ष इसी अवधि में 11.9 प्रतिशत की तुलना में प्रभावशाली रूप से 20.1 प्रतिशत बढ़े हैं जो 1996-97 से सर्वोच्च अभिवृद्धि है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा प्राथमिकता वाले क्षेत्र को दिए गए निवल बैंक उधार 2003-04 में 40 प्रतिशत के लक्ष्य को पार करके 44.0 प्रतिशत पर पहुंच गए। तथापि, कृषि संबंधी उप-लक्ष्य को प्राप्त करने में कई कमियां रह गईं। सरकार द्वारा एक व्यापक नीति की घोषणा करने के पश्चात, जिसके अंतर्गत चालू वर्ष के दौरान कृषि-ऋण में 30 प्रतिशत वृद्धि तथा इस क्षेत्र में तीन वर्षों के भीतर ऋण-प्रवाह को दुगुना करने की परिकल्पना की गई है, इस क्षेत्र में संस्थागत ऋण 2003-04 के 86,981 करोड़ रुपए से बढ़कर 2004-05 में 1,08,500 करोड़ रुपए हो जाने का अनुमान है।

11. चालू वर्ष के दौरान, पांच प्रमुख बैंकों की जमा-दरों में 25 आधार-अंकों की मामूली बढ़ोतरी हुई। आवासीय ऋणों की ब्याज दरों में भी मामूली तेजी देखी गई। मांग मुद्रा दरों में वर्ष के उत्तरार्द्ध में बढ़ोतरी हुई जो बैंक ऋणों की उच्च वृद्धि की प्रतिबिम्बित करता है। हालांकि, ब्याज दरें अभी भी सामान्य बनी हुई हैं। दिसम्बर, 2004 में पांच प्रमुख बैंकों की आधार ऋण दरें, पिछले वर्ष की दरों की तुलना में 25 से 50 आधार-अंक कम थीं।

12. कलेंडर वर्ष 2003 में सुदृढ़ इक्विटी इंडेक्स आय से 2004 में प्राथमिक बाजार में पुनः तेजी आई। 2004 में सकल सार्वजनिक निर्गम राशि लगभग पांच गुना बढ़ कर 35,859 करोड़ रुपए हो गई। यह अभिवृद्धि इक्विटी निर्गमों विशेषकर प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्तावों (आईपीओ) पर केन्द्रित रही।

केन्द्र सरकार के वित्त

13. सरकार की प्राप्तियों तथा व्यय से संबद्ध प्रवृत्तियों की तीसरी तिमाही समीक्षा (अप्रैल-दिसम्बर, 2004 के दौरान) को शीघ्र ही संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखा जाएगा। वर्ष 2004-05 के संशोधित अनुमान यह संकेत देते हैं कि वर्ष के दौरान राजस्व घाटा तथा राजकोषीय घाटे का अनुमान 85,165 करोड़ रुपए (जीडीपी का 2.7 प्रतिशत) और 139,231 करोड़ रुपए (जीडीपी का 4.5 प्रतिशत) रुपए है जो बजट 2004-05 में निरूपित 76,171 करोड़ रुपए (जीडीपी का 2.5 प्रतिशत) और 137,407 करोड़ रुपए (जीडीपी का 4.4 प्रतिशत) की तुलना में है। वर्ष 2003-04 में ये घाटे क्रमशः जीडीपी का 3.6 प्रतिशत तथा जीडीपी का 4.5 प्रतिशत थे। इसलिए, राजकोषीय उत्तरदायित्व तथा बजट प्रबंधन अधिनियम, 2003 के अंतर्गत अधिदेशित न्यूनतम घाटे में कमी को वर्ष 2004-05 में प्राप्त किया जा रहा है।

परिदृश्य

14. अच्छी मानसून-पश्च वर्षा, जो विशेषकर अक्टूबर 2004 में हुई, से जमीन में नमी आई तथा रबी के मौसम भर ठंडा मौसम बने रहने से रबी की अच्छी फसल होने की संभावना बढ़ गई है तथा उम्मीद है कि इससे खरीफ की पैदावार में हुई कमी की आंशिक रूप से भरपाई हो सकेगी। संवर्धित क्षमता उपयोग, बेहतर औद्योगिक वातावरण, बढ़ती हुई बाह्य तथा स्वदेशी मांग तथा ऋण की सरल उपलब्धता आदि के कारण मौजूदा प्रवृत्तियां औद्योगिक विकास का सकारात्मक परिदृश्य प्रस्तुत करती हैं। पूंजीगत वस्तुओं के संवर्धित आयात के साथ-साथ पूंजीगत वस्तुओं का शानदार निष्पादन भी बहुत से उद्योगों में स्वदेशी क्षमता विस्तार के लिए शुभ संकेत हैं। अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों की ये प्रवृत्तियां तथा 28 अगस्त, 2004 के बाद थोक मूल्य सूचकांक में लगातार गिरावट इस बात के संकेत हैं कि एक सुदृढ़ विस्तार हो रहा है और यह केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के 2004-05 में 6.9 प्रतिशत वृद्धि दर के पूर्व अनुमान की पुष्टि करते हैं।

बृहद आर्थिक रूपरेखा विवरण
(आर्थिक कार्य निष्पादन : एक दृष्टि)

क्र.सं.	मद	निरपेक्ष मूल्य		प्रतिशत परिवर्तन	
		अप्रैल-दिसंबर		अप्रैल-दिसंबर	
		2003-04	2004-05	2003-04	2004-05
वास्तविक क्षेत्र					
1.	कारक लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (हजार करोड़ रुपए)*				
	(क) वर्तमान मूल्य पर	2519.8 त्व.	2838.1 अ.	11.7	12.6 अ.
	(ख) 1993-94 के मूल्य पर	1430.5 त्व.	1529.4 अ.	8.5	6.9 अ.
2.	औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक (1)	184	199.4	6.6	8.4
3.	थोक मूल्य सूचकांक (आधार 1993-94=100)(2)	176.9	188.2	5.9	6.4
4.	उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (1992=100)(3)	502	521	3.7	3.8
5.	मुद्रा पूर्ति (एम3) (हजार करोड़ रुपए)	1901.8	2151.5 (2148.0)	13.1	13.1 \$ (12.9)
6.	वर्तमान मूल्यों पर आयात**				
	(क) करोड़ रुपए में	254297	333907	18.7	31.3
	(ख) मिलियन अमरीकी डालर में	55111	73652	25	33.6
7.	वर्तमान मूल्यों पर निर्यात				
	(क) करोड़ रुपए में	199940	242435	7.0	21.3
	(ख) मिलियन अमरीकी डालर में	43347	53499	12.7	23.4
8.	व्यापार संतुलन (मिलियन अमरीकी डालर में)	-11765	-20153	108.6	71.3
9.	विदेशी मुद्रा परिसम्पत्तियां				
	(क) करोड़ रुपए में	445232	545466	38.4	22.5
	(ख) मिलियन अमरीकी डालर में	97617	125164	45.7	28.2
10.	चालू लेखा संतुलन (मिलियन अमरीकी डालर में)	2191 @	-3259 @	...	...
सरकार की वित्तीय स्थिति##		(करोड़ रुपए)			
1.	राजस्व प्राप्तियां	170543	188493	13.3	10.5
2.	कर राजस्व (निवल)	118795	141246	14.4	18.9
3.	कर-भिन्न राजस्व	51748	47247	10.9	-8.7
4.	पूंजीगत प्राप्तियां (5+6+7)	145760	138298	38.8	-5.1
5.	ऋणों की वसूली	51785	45153	231.6	-12.8
6.	अन्य प्राप्तियां	1540	2906	-50.7	88.7
7.	उधार और अन्य देनदारियां	92435	90239	7.1	-2.4
8.	कुल प्राप्तियां (1+4)	316303	326791	23.8	3.3
9.	आयोजना-भिन्न व्यय	239614	245567	25.4	2.5
10.	राजस्व लेखा	194505	198208	7.8	1.9
	जिसमें से:				
11.	ब्याज भुगतान	78587	79885	6.9	1.7
12.	पूंजी खाता	45109	47359	327.5	5.0
13.	आयोजना व्यय	76689	81224	18.9	5.9
14.	राजस्व खाता	49037	53254	28.9	8.6
15.	पूंजीगत खाता	27652	27970	4.6	1.2
16.	कुल व्यय (9+13)	316303	326791	23.8	3.3
17.	राजस्व व्यय (10+14)	243542	251462	11.5	3.3
18.	पूंजी व्यय (12+15)	72761	75329	96.7	3.5
19.	राजस्व घाटा (17-1)	72999	62969	7.3	-13.7
20.	राजकोषीय घाटा {16-(1+5+6)}	92435	90239	7.1	-2.4
21.	प्रारम्भिक घाटा (20-11)	13848	10354	8.5	-25.2

अ.अ. - अग्रिम अनुमान

त्व.अ.- त्वरित अनुमान

* पूर्ण वर्ष से संबंधित है।

1. आधार 1993-94=100

2. दिसंबर के अंत में (बिंदु दर बिंदु)

3. दिसंबर के अंत में (बिंदु दर बिंदु)

महालेखा नियंत्रक, व्यय विभाग, वित्त मंत्रालय द्वारा यथासूचित 2003-04 के आंकड़े अंतिम और अलेखापरीक्षित हैं।

\$ आंकड़े 24 दिसंबर, 2004 से संबंधित हैं। लघु कोष्ठकों में दिए गए आंकड़ों में 11 अक्टूबर, 2004 से गैर-बैंकिंग कंपनी के बैंकिंग कंपनी के परिवर्तन का प्रभाव शामिल नहीं है।

** सीमाशुल्क आधार पर

@ अवधि अप्रैल-सितंबर से संबंधित है।